Date - 20 January 2021

हाइब्रिड आतंकवादी

- हाइब्रिड आतंकवादी वे लोग होते हैं जिन्हें आतंकवादी समूहों द्वारा केवल एक या दो मिशन करने के लिए लाया जाता है। वे मूल रूप से आतंकवादी समूहों की सहायता करते हैं।
- उदाहरण के लिए, आतंकवादियों को हथियार रखने की अनुमति देने वाले दुकानदार, मुखबिर आदि हाइब्रिड आतंकवादी हैं।
- वे अस्थायी या ठेका मजदूर की तरह हैं। वे एक आतंकवादी समूह का हिस्सा नहीं हैं। हालांकि, उन्हें एक विशिष्ट कार्य करने के लिए प्रशिक्षित किया जाता है।

भारत में हाइब्रिड आतंकवादी

- जम्मू-कश्मीर में हाइब्रिड आतंकवादी बढ़ रहे हैं। आतंकवादी समूह राजनीतिक कार्यकर्ताओं, नागरिकों और अल्पसंख्यक समुदायों के लोगों को हाइब्रिड आतंकवादियों में बदलने के लिए उन्हें निशाना बना रहे हैं।
- इन संकर आतंकवादियों को आतंकवादी समूहों द्वारा कट्टर बनाया जाता है। फिर उन्हें स्टैंडबाय मोड पर रखा जाता है।
- उन्हें आतंकवादी घटना को अंजाम देने के लिए सही समय पर लॉन्च किया जाता है। हाइब्रिड आतंकियों को टारगेट हिट करने की ट्रेनिंग दी जाती है|

चुनौतियां

- सुरक्षा बलों के सामने सबसे पहली और सबसे बड़ी चुनौती की पहचान कर ली गई है। हाइब्रिड आतंकवादियों के ठिकाने या ठिकाने का पता लगाना बेहद मुश्किल है।
- उन्हें मुठभेड़ों के माध्यम से रोकना या गिरफ्तार करना या खत्म करना भी मुश्किल है। हाइब्रिड आतंकवादियों की पहचान करने के लिए साइबर पेट्रोल और तकनीकी गैजेट ही दो तरीके हैं।

नार्को टेरर एंड हाइब्रिड टेररिस्ट

- नशीले पदार्थों के आतंकवाद में, नशीली दवाओं से अर्जित धन का उपयोग अवैध गतिविधियों में किया जाता है।

Yojna IAS

- नार्को आतंकवादी इस पैसे का इस्तेमाल नशीली दवाओं की तस्करी के माध्यम से हथियार और गोला-बारूद खरीदने के लिए करते हैं।
- आतंकवादी मादक पदार्थों की तस्करी से अर्जित धन का उपयोग हाइब्रिड आतंकवादियों को भुगतान करने के लिए करते हैं।

भविष्य के खतरे

- लगभग 300 प्रशिक्षित हाइब्रिड आतंकवादी कश्मीर घाटी में घुसपैठ करने के लिए लॉन्च पैड का इंतजार कर रहे हैं। उन्हें विभिन्न आतंकवादी गतिविधियों को सौंपा गया है।
- सेना के अधिकारियों के अनुसार, वे कुपवाड़ा और गुरेज सेक्टरों से प्रवेश करने की योजना बना रहे हैं।
-

अंतरिक्ष स्टेशन

- चीन वर्ष 2024 तक या अधिकतम 2030 तक निजी 'अंतरिक्ष स्टेशन' रखने वाला और संभवत: एकमात्र देश बनने के लिए तैयार है।
- भारत भी अगले कुछ वर्षों में अपना खुद का अंतरिक्ष स्टेशन स्थापित करने की योजना बना रहा है।
- हाल ही में केंद्रीय अंतरिक्ष मंत्री जितेंद्र सिंह ने संसद में घोषणा की थी कि भारत का पहला अंतरिक्ष स्टेशन 2030 तक स्थापित किया जाएगा।

पृष्ठभूमि:

- हालांकि वर्तमान में 'अंतर्राष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन' (आईएसएस) का कार्यकाल वर्ष 2024 में समाप्त होने वाला है, नासा और इस परियोजना के अन्य अंतरराष्ट्रीय भागीदारों ने 'अंतर्राष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन' (आईएसएस) का संचालन शुरू कर दिया है। जीवन प्रत्याशा को 2030 तक बढ़ाया जाएगा।

चीनी अंतरिक्ष स्टेशन के बारे में:

- चीन का नया मल्टी-मॉड्यूल 'तियांगोंग' अंतरिक्ष स्टेशन कम से कम 10 साल तक काम करने के लिए तैयार है।
- यह अंतरिक्ष स्टेशन पृथ्वी की सतह से 340-450 किमी की ऊंचाई पर पृथ्वी की निचली कक्षा में काम करेगा।

चीनी अंतरिक्ष स्टेशन का महत्व:

- पृथ्वी की निचली कक्षा में स्थित चीनी अंतरिक्ष स्टेशन, चीन के आकाश के दृश्य के रूप में कार्य करेगा, और यह चीनी अंतरिक्ष यात्रियों के लिए शेष विश्व का चौबीसों घंटे विहंगम दृश्य प्रदान करेगा।
- यह अंतरिक्ष स्टेशन 2030 तक चीन को एक प्रमुख अंतरिक्ष शक्ति बनने का लक्ष्य हासिल करने में मदद करेगा।

Yojna IAS

संबंधित चिंताएं:

- चीन का अंतरिक्ष स्टेशन रोबोटिक आर्म से लैस होगा, जिसने अमेरिका द्वारा उसके संभावित सैन्य अनुप्रयोगों के बारे में चिंताएं बढ़ा दी हैं।
- चिंताजनक रूप से, इस तकनीक का "भविष्य में अन्य उपग्रहों के साथ मॉल-युद्ध करने के लिए उपयोग किया जा सकता है"।

भारतीय अंतरिक्ष स्टेशन:

- भारत वर्ष 2030 तक अपना 'अंतरिक्ष स्टेशन' लॉन्च करने की योजना बना रहा है।
- भारतीय अंतरिक्ष स्टेशन अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन की तुलना में बहुत छोटा (द्रव्यमान 20 टन) होगा और इसका उपयोग माइक्रोग्रैविटी प्रयोग (अंतरिक्ष पर्यटन के लिए नहीं) करने के लिए किया जाएगा।
- अंतरिक्ष स्टेशन के लिए प्रारंभिक योजना के तहत, अंतरिक्ष यात्रियों को 20 दिनों के लिए अंतरिक्ष में रखा जाएगा। यह परियोजना 'गगनयान मिशन' का विस्तार होगी।
- यह अंतरिक्ष स्टेशन लगभग 400 किमी की ऊंचाई पर पृथ्वी की परिक्रमा करेगा।
- भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) द्वारा एक अंतरिक्ष डॉकिंग प्रयोग (स्पैडेक्स) पर काम किया जा रहा है। अंतरिक्ष स्टेशन को क्रियाशील बनाने के लिए यह एक महत्वपूर्ण तकनीक है।

अन्य अंतरिक्ष स्टेशन:

- वर्तमान में, अंतरिक्ष कक्षा में एकमात्र अंतरिक्ष स्टेशन, अंतर्राष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन (ISS) कार्यरत है। आईएसएस संयुक्त राज्य अमेरिका, रूस, यूरोप, जापान और कनाडा की एक अंतरराष्ट्रीय सहयोग परियोजना है।
- चीन अब तक 'तियांगोंग-1' और 'तियांगोंग-2' नाम के दो परीक्षण अंतरिक्ष स्टेशनों को अंतरिक्ष की कक्षा में भेज चुका है।

महत्व:

- विशेष रूप से जैविक प्रयोगों के लिए सार्थक वैज्ञानिक डेटा एकत्र करने के लिए 'अंतरिक्ष स्टेशन' आवश्यक हैं।
- 'अंतरिक्ष स्टेशन' अन्य अंतरिक्ष वाहनों की तुलना में अधिक संख्या में और लंबी अवधि के लिए वैज्ञानिक अध्ययन के लिए मंच प्रदान करते हैं।
- प्रत्येक क्रू सदस्य अंतरिक्ष स्टेशन पर हफ्तों या महीनों तक रहता है, लेकिन उनकी अंतरिक्ष उड़ान की अवधि आमतौर पर एक वर्ष से अधिक नहीं होती है।
- अंतरिक्ष स्टेशनों का उपयोग मानव शरीर पर लंबी अवधि की अंतरिक्ष उड़ान के प्रभावों का अध्ययन करने के लिए भी किया जाता है।

Yojna IAS

स्ट्रीट फॉर पीपल चैलेंज

- आवास और शहरी मामलों के मंत्रालय (MoHUA) ने स्ट्रीट फॉर पीपल चैलेंज के लिए ग्यारह विजेता शहरों और नर्चरिंग नेबरहुड चैलेंज के पायलट चरण के लिए दस विजेता शहरों की घोषणा की।

स्ट्रीट फॉर पीपल चैलेंज:

- यह एक शहर के नेतृत्व में एक तरह की एक डिजाइन प्रतियोगिता है।
- यह प्रतियोगिता देश भर के शहरों को हितधारकों और नागरिकों के परामर्श से लोगों के लिए सड़कों की एक एकीकृत दृष्टि विकसित करने में सहायता करती है।
- प्रत्येक शहर स्थान, समय सीमा और पुरस्कारों पर विशिष्ट विवरण के साथ अपनी खुद की डिजाइन प्रतियोगिता शुरू करता है।

नर्चरिंग नेबरहुड चैलेंज:

- यह तीन साल का कार्यक्रम है जिसका उद्देश्य भारतीय शहरों और अन्य भागीदारों के साथ सार्वजनिक स्थान, गतिशीलता, पड़ोस की योजना, प्रारंभिक बचपन सेवाओं और सुविधाओं तक पहुंच और शहरी एजेंसियों के डेटा प्रबंधन में सुधार के लिए विभिन्न मानकों और तरीकों पर सहयोग करना है।
- यह सभी स्मार्ट शहरों, 5,00,000 से अधिक आबादी वाले अन्य शहरों और राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों की राजधानियों के लिए खुला होगा।

क्षमता निर्माण में शहरों को निम्नलिखित के लिए तकनीकी और अन्य सहायता मिलेगी:

- पार्कों और खुले स्थानों की पुनर्कल्पना करना
- बाल देखभाल सुविधाओं तक पहुंच में सुधार
- बचपन उन्मुख सुविधाओं के साथ सार्वजनिक स्थानों को अपनाना
- छोटे बच्चों और परिवारों के लिए सुगम, सुरक्षित, चलने योग्य सड़कें बनाना

अन्य नवीनतम पहल:

- भारत साइकिल 4 चेंज चैलेंज
- क्लाइमेट स्मार्ट सिटीज असेसमेंट फ्रेमवर्क (CSCAF) 0
-

Yojna IAS

ग्रेट रेजिगनेशन

- हाल ही में, कोविड-19 के बाद, विशेष रूप से अमेरिका और यूरोपीय देशों में बड़ी संख्या में लोग "एंटीवर्क" के सिद्धांत को अपनाकर अपनी नौकरी से निकल रहे हैं।
- यूएस ब्यूरो ऑफ लेबर स्टैटिस्टिक्स (BLS) के अनुसार, अगस्त 2021 में रिकॉर्ड 3 मिलियन लोगों ने इस्तीफा दिया, जो जुलाई से 2,42,000 की वृद्धि है।
- अमेरिकी मनोवैज्ञानिक एंथनी क्लॉट्ज़ ने इसे " ग्रेट रेजिगनेशन" कहा है जो कार्य-जीवन समीकरण में प्राथमिकताओं को फिर से परिभाषित करने का आह्वान है।

कोविड का प्रभाव:

- बाहर निकलने वालों में मुख्य रूप से खुदरा और आतिथ्य क्षेत्र के वे लोग शामिल हैं जो नौकरी बदलने या अपने विकल्पों का पुनर्मूल्यांकन करने के इच्छुक थे।
- मध्य और पूर्वी यूरोप के कई देशों ने कुशल श्रम शक्ति में गिरावट दर्ज की है।
- हालांकि यह एक मजबूत सामाजिक सुरक्षा जाल के कारण हो सकता है।
- महामारी और लॉकडाउन से बचे रहना और उनका मुकाबला करना ही कई लोगों को 'काम-मुक्त' जीवन को एक व्यवहार्य विकल्प के रूप में देखने के लिए प्रेरित करता है।

ग्रेट रेजिगनेशन का महत्व

- कम वेतन, अव्यवहारिक काम की समय सीमा और खराब नेतृत्व या बॉस आदि से संबंधित समस्याओं ने 'महान इस्तीफे' को और बढ़ावा दिया है।
- इसका मतलब यह भी है कि इन कामगारों के पास अपने मौजूदा नियोक्ताओं से परे बाजार मूल्य हैं और वे बहुत बेहतर रोजगार प्राप्त कर सकते हैं।
- वे नौकरी के बेहतर अवसर प्राप्त करने या स्टार्ट-अप चुनने के लिए अपने अनुभव पर भरोसा करते हैं।
- एक सामान्य आशंका यह भी है कि क्षमता निर्माण में पर्याप्त पूंजी आवंटन नहीं किया गया है।

भारत की स्थिति:

- सामाजिक सुरक्षा और बेरोजगारी लाभ के अभाव के कारण भारत में ऐसी कोई घटना नहीं देखी गई है।
- भारत में अधिकांश लोगों के लिए नौकरी छोड़ने की विलासिता या विशेषाधिकार उपलब्ध नहीं था।
- हालांकि, 'रिमोट वर्किंग' या 'वर्क फ्रॉम होम' ने कॉरपोरेट्स और कर्मचारियों के लिए एक लचीला कार्य मॉडल संभव बना दिया है।
- इससे टियर-2 और टियर-3 शहरों में लोगों की नौकरी जा रही है। जिससे भारत की स्थानीय अर्थव्यवस्था बदल रही है।
- इसके साथ ही, वर्क फ्रॉम होम ने बाजार में मांग संरचना में बदलाव की शुरुआत की है।
- इसके अलावा भारतीय आईटी और आईटीईएस क्षेत्रों में भी लोग अपनी नौकरी बदल रहे हैं।

Yojna IAS

- कई स्टार्ट-अप यूनिकॉर्न बन गए हैं और कई थोक में काम पर रख रहे हैं और बहुत अधिक भुगतान करने के लिए तैयार हैं।

Swadeep Kumar

Yojna IAS